



Naresh aggarwal

13 Sep 1965

09:45 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120876501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 13/09/1965
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 09:45:00 घंटे
इष्ट _____: 09:10:12 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:23:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:03:57 घंटे
साम्पातिक काल _____: 08:51:41 घंटे
सूर्योदय _____: 06:04:55 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:28:55 घंटे
दिनमान _____: 12:24:00 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 26:47:17 सिंह
लग्न के अंश _____: 14:04:02 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: रेवती - 2
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: वृद्धि
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: गज
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: दो-दौलत
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1887	भाद्रपद	22
पंजाबी	संवत : 2022	भाद्रपद	29
बंगाली	सन् : 1372	भाद्रपद	28
तमिल	संवत : 2022	आवनी	29
केरल	कोल्लम : 1141	चिंगम	28
नेपाली	संवत : 2022	भाद्रपद	29
चैत्रादि	संवत : 2022	आश्विन	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2022	भाद्रपद	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 2
तिथि समाप्ति काल _____ : 07:19:28
जन्म तिथि _____ : 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 24:58:39 घंटे
जन्म योग _____ : रेवती
सूर्योदय कालीन योग _____ : वृद्धि
योग समाप्ति काल _____ : 23:40:56 घंटे
जन्म योग _____ : वृद्धि
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 07:19:28 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 25:16:08
भभोग _____ : 63:20:16
भोग्य दशा काल _____ : बुध 10 वर्ष 2 मा 29 दि

घात चक्र

मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

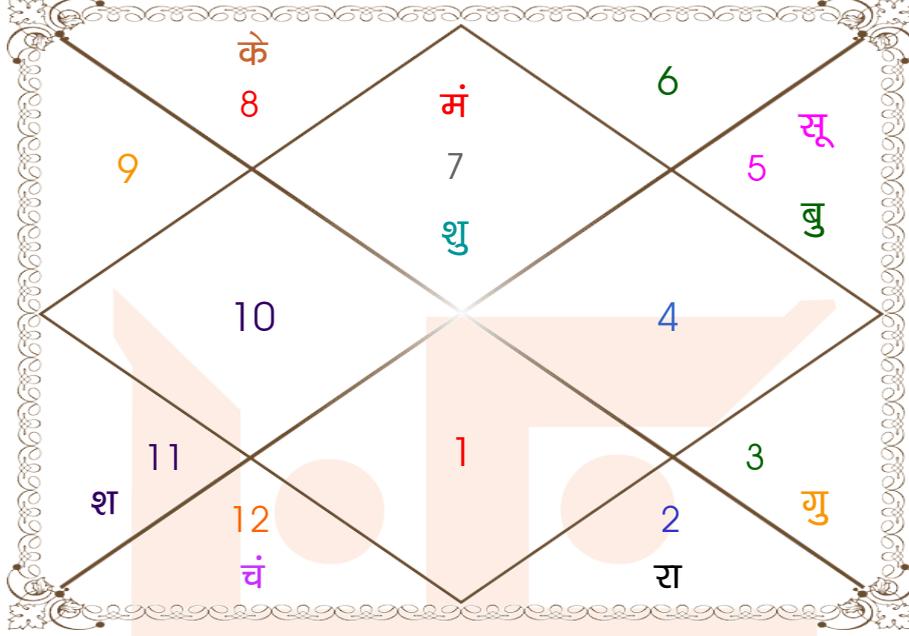
Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

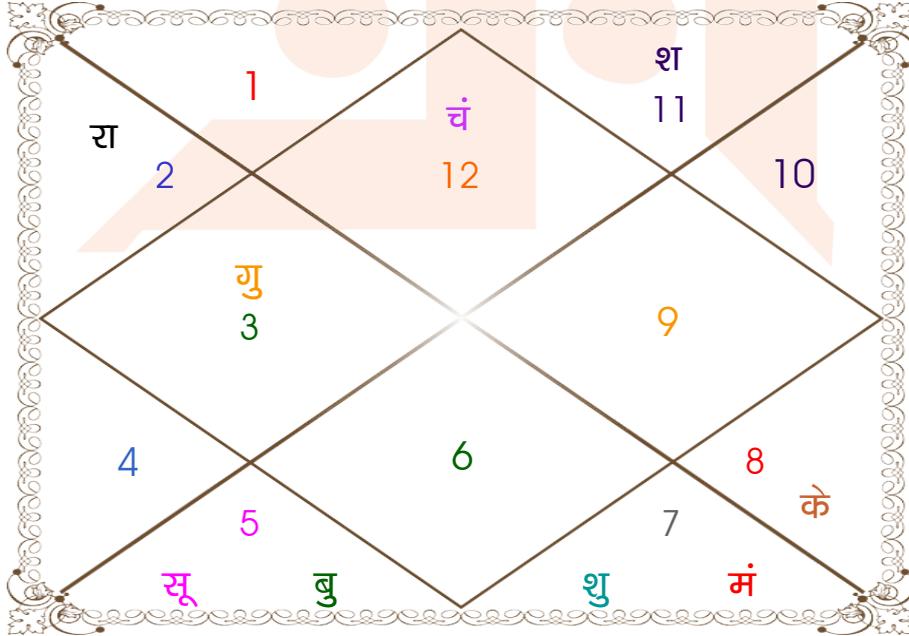
chauhansushil679@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

चं	रा	गु
श		बु सू
के	शु ल मं	

लग्न कुण्डली

रा	चं
गु	श
सू बु	मं ल शु
के	

विंशोत्तरी
बुध 10वर्ष 2मा 29दि
बुध

13/09/1965

12/12/2078

बुध	13/12/1975
केतु	12/12/1982
शुक्र	12/12/2002
सूर्य	12/12/2008
चन्द्र	12/12/2018
मंगल	12/12/2025
राहु	13/12/2043
गुरु	13/12/2059
शनि	12/12/2078

योगिनी

उल्का 3वर्ष 7मा 12दि
धान्या

26/04/2023

26/04/2026

धान्या	27/07/2023
भ्रामरी	25/11/2023
भद्रिका	26/04/2024
उल्का	25/10/2024
सिद्धा	26/05/2025
संकटा	25/01/2026
मंगला	24/02/2026
पिंगला	26/04/2026

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

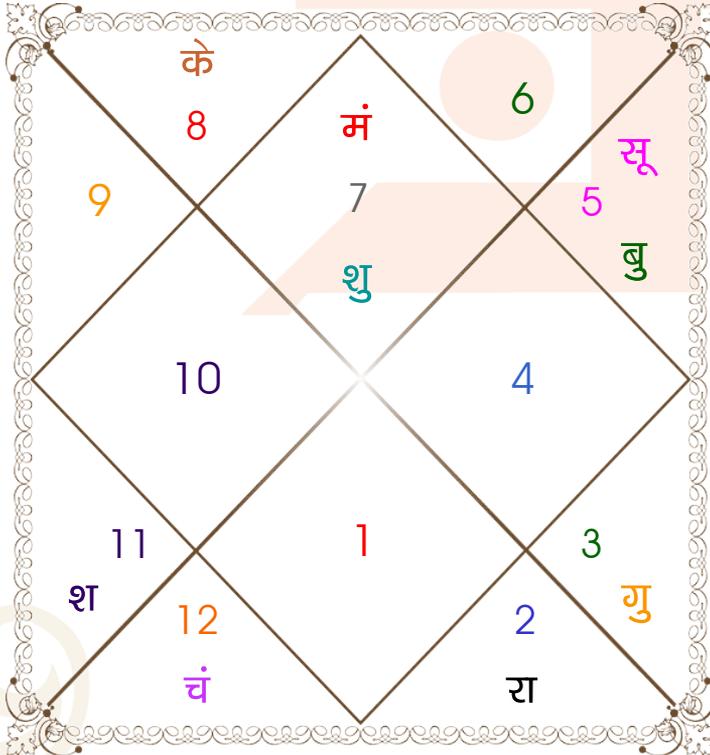
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न		तुला	14:04:02	309:46:17	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	---
सूर्य		सिंह	26:47:17	00:58:24	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	सूर्य	स्वराशि
चंद्र		मीन	21:57:48	12:36:44	रेवती	2	27	गुरु	बुध	सूर्य	सम राशि
मंगल		तुला	22:04:35	00:40:22	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	सम राशि
बुध		सिंह	14:16:08	01:48:12	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि
गुरु		मिथु	05:49:25	00:06:38	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	शत्रु राशि
शुक्र		तुला	05:51:47	01:10:33	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	मूलत्रिकोण
शनि	व	कुंभ	19:57:02	00:04:32	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	मंगल	मूलत्रिकोण
राहु	व	वृष	14:25:58	00:09:39	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
केतु	व	वृश्चि	14:25:58	00:09:39	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	मित्र राशि
हर्ष		सिंह	22:10:33	00:03:46	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	---
नेप		तुला	24:24:07	00:01:23	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
प्लूटो		सिंह	22:52:37	00:02:08	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	---
दशम भाव		कर्क	17:05:24	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	बुध	--

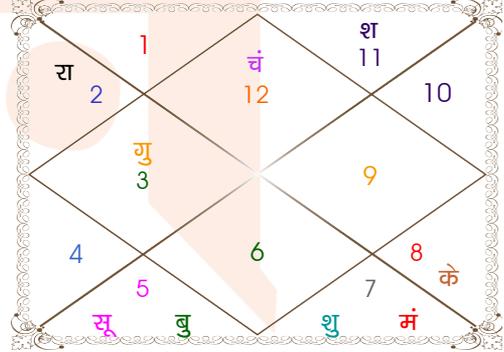
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:22:25

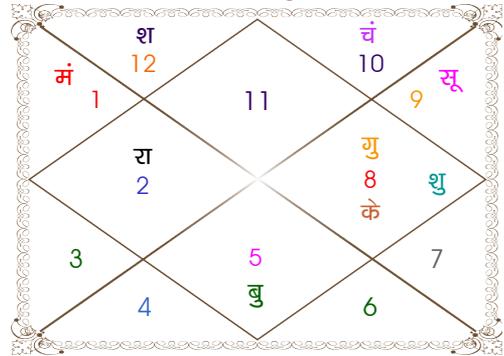
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 29:34:16	तुला 14:04:02
2	तुला 29:34:16	वृश्चिक 15:04:29
3	धनु 00:34:43	धनु 16:04:57
4	मकर 01:35:10	मकर 17:05:24
5	कुम्भ 01:35:10	कुम्भ 16:04:57
6	मीन 00:34:43	मीन 15:04:29
7	मीन 29:34:16	मेष 14:04:02
8	मेष 29:34:16	वृष 15:04:29
9	मिथुन 00:34:43	मिथुन 16:04:57
10	कर्क 01:35:10	कर्क 17:05:24
11	सिंह 01:35:10	सिंह 16:04:57
12	कन्या 00:34:43	कन्या 15:04:29

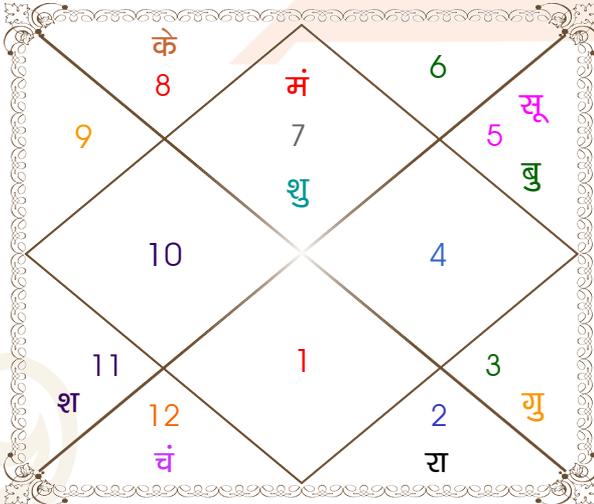
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	14:04:02
2	वृश्चिक	13:09:13
3	धनु	14:20:17
4	मकर	17:05:24
5	कुम्भ	19:25:58
6	मीन	18:45:53
7	मेष	14:04:02
8	वृष	13:09:13
9	मिथुन	14:20:17
10	कर्क	17:05:24
11	सिंह	19:25:58
12	कन्या	18:45:53

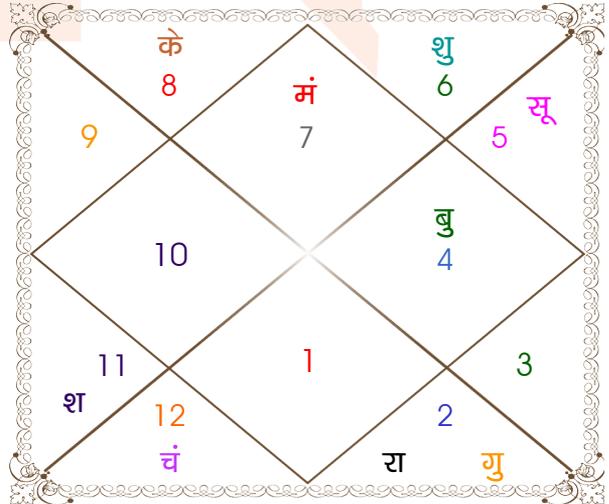
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 2 मास 29 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
13/09/1965	13/12/1975	12/12/1982	12/12/2002	12/12/2008
13/12/1975	12/12/1982	12/12/2002	12/12/2008	12/12/2018
00/00/0000	केतु 10/05/1976	शुक्र 13/04/1986	सूर्य 01/04/2003	चंद्र 12/10/2009
00/00/0000	शुक्र 10/07/1977	सूर्य 13/04/1987	चंद्र 01/10/2003	मंगल 13/05/2010
13/09/1965	सूर्य 15/11/1977	चंद्र 12/12/1988	मंगल 05/02/2004	राहु 12/11/2011
सूर्य 11/01/1966	चंद्र 16/06/1978	मंगल 11/02/1990	राहु 30/12/2004	गुरु 13/03/2013
चंद्र 13/06/1967	मंगल 12/11/1978	राहु 11/02/1993	गुरु 18/10/2005	शनि 12/10/2014
मंगल 09/06/1968	राहु 30/11/1979	गुरु 13/10/1995	शनि 30/09/2006	बुध 13/03/2016
राहु 28/12/1970	गुरु 05/11/1980	शनि 12/12/1998	बुध 07/08/2007	केतु 12/10/2016
गुरु 03/04/1973	शनि 15/12/1981	बुध 12/10/2001	केतु 13/12/2007	शुक्र 13/06/2018
शनि 13/12/1975	बुध 12/12/1982	केतु 12/12/2002	शुक्र 12/12/2008	सूर्य 12/12/2018

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
12/12/2018	12/12/2025	13/12/2043	13/12/2059	12/12/2078
12/12/2025	13/12/2043	13/12/2059	12/12/2078	00/00/0000
मंगल 10/05/2019	राहु 24/08/2028	गुरु 30/01/2046	शनि 15/12/2062	बुध 10/05/2081
राहु 28/05/2020	गुरु 18/01/2031	शनि 12/08/2048	बुध 24/08/2065	केतु 07/05/2082
गुरु 04/05/2021	शनि 24/11/2033	बुध 18/11/2050	केतु 03/10/2066	शुक्र 07/03/2085
शनि 13/06/2022	बुध 12/06/2036	केतु 25/10/2051	शुक्र 03/12/2069	सूर्य 13/09/2085
बुध 10/06/2023	केतु 01/07/2037	शुक्र 25/06/2054	सूर्य 15/11/2070	00/00/0000
केतु 06/11/2023	शुक्र 30/06/2040	सूर्य 13/04/2055	चंद्र 15/06/2072	00/00/0000
शुक्र 05/01/2025	सूर्य 25/05/2041	चंद्र 12/08/2056	मंगल 25/07/2073	00/00/0000
सूर्य 13/05/2025	चंद्र 24/11/2042	मंगल 19/07/2057	राहु 31/05/2076	00/00/0000
चंद्र 12/12/2025	मंगल 13/12/2043	राहु 13/12/2059	गुरु 12/12/2078	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 10 वर्ष 2 मा 18 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु 12/12/2025 24/08/2028	राहु - गुरु 24/08/2028 18/01/2031	राहु - शनि 18/01/2031 24/11/2033	राहु - बुध 24/11/2033 12/06/2036	राहु - केतु 12/06/2036 01/07/2037
राहु 09/05/2026 गुरु 17/09/2026 शनि 21/02/2027 बुध 10/07/2027 केतु 06/09/2027 शुक्र 17/02/2028 सूर्य 07/04/2028 चंद्र 28/06/2028 मंगल 24/08/2028	गुरु 19/12/2028 शनि 07/05/2029 बुध 08/09/2029 केतु 29/10/2029 शुक्र 24/03/2030 सूर्य 07/05/2030 चंद्र 19/07/2030 मंगल 08/09/2030 राहु 18/01/2031	शनि 02/07/2031 बुध 26/11/2031 केतु 26/01/2032 शुक्र 17/07/2032 सूर्य 07/09/2032 चंद्र 03/12/2032 मंगल 02/02/2033 राहु 08/07/2033 गुरु 24/11/2033	बुध 05/04/2034 केतु 29/05/2034 शुक्र 31/10/2034 सूर्य 17/12/2034 चंद्र 04/03/2035 मंगल 28/04/2035 राहु 15/09/2035 गुरु 17/01/2036 शनि 12/06/2036	केतु 05/07/2036 शुक्र 06/09/2036 सूर्य 26/09/2036 चंद्र 28/10/2036 मंगल 19/11/2036 राहु 16/01/2037 गुरु 08/03/2037 शनि 07/05/2037 बुध 01/07/2037
राहु - शुक्र 01/07/2037 30/06/2040	राहु - सूर्य 30/06/2040 25/05/2041	राहु - चंद्र 25/05/2041 24/11/2042	राहु - मंगल 24/11/2042 13/12/2043	गुरु - गुरु 13/12/2043 30/01/2046
शुक्र 30/12/2037 सूर्य 23/02/2038 चंद्र 25/05/2038 मंगल 28/07/2038 राहु 09/01/2039 गुरु 04/06/2039 शनि 24/11/2039 बुध 28/04/2040 केतु 30/06/2040	सूर्य 17/07/2040 चंद्र 13/08/2040 मंगल 01/09/2040 राहु 21/10/2040 गुरु 04/12/2040 शनि 25/01/2041 बुध 12/03/2041 केतु 31/03/2041 शुक्र 25/05/2041	चंद्र 10/07/2041 मंगल 11/08/2041 राहु 01/11/2041 गुरु 13/01/2042 शनि 10/04/2042 बुध 26/06/2042 केतु 28/07/2042 शुक्र 28/10/2042 सूर्य 24/11/2042	मंगल 16/12/2042 राहु 12/02/2043 गुरु 04/04/2043 शनि 04/06/2043 बुध 28/07/2043 केतु 19/08/2043 शुक्र 22/10/2043 सूर्य 11/11/2043 चंद्र 13/12/2043	गुरु 25/03/2044 शनि 27/07/2044 बुध 14/11/2044 केतु 30/12/2044 शुक्र 09/05/2045 सूर्य 16/06/2045 चंद्र 20/08/2045 मंगल 05/10/2045 राहु 30/01/2046
गुरु - शनि 30/01/2046 12/08/2048	गुरु - बुध 12/08/2048 18/11/2050	गुरु - केतु 18/11/2050 25/10/2051	गुरु - शुक्र 25/10/2051 25/06/2054	गुरु - सूर्य 25/06/2054 13/04/2055
शनि 25/06/2046 बुध 03/11/2046 केतु 27/12/2046 शुक्र 31/05/2047 सूर्य 16/07/2047 चंद्र 01/10/2047 मंगल 24/11/2047 राहु 11/04/2048 गुरु 12/08/2048	बुध 07/12/2048 केतु 25/01/2049 शुक्र 12/06/2049 सूर्य 23/07/2049 चंद्र 30/09/2049 मंगल 17/11/2049 राहु 21/03/2050 गुरु 10/07/2050 शनि 18/11/2050	केतु 08/12/2050 शुक्र 03/02/2051 सूर्य 20/02/2051 चंद्र 20/03/2051 मंगल 09/04/2051 राहु 30/05/2051 गुरु 15/07/2051 शनि 07/09/2051 बुध 25/10/2051	शुक्र 04/04/2052 सूर्य 23/05/2052 चंद्र 12/08/2052 मंगल 08/10/2052 राहु 03/03/2053 गुरु 11/07/2053 शनि 12/12/2053 बुध 29/04/2054 केतु 25/06/2054	सूर्य 09/07/2054 चंद्र 03/08/2054 मंगल 20/08/2054 राहु 03/10/2054 गुरु 11/11/2054 शनि 27/12/2054 बुध 06/02/2055 केतु 23/02/2055 शुक्र 13/04/2055

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

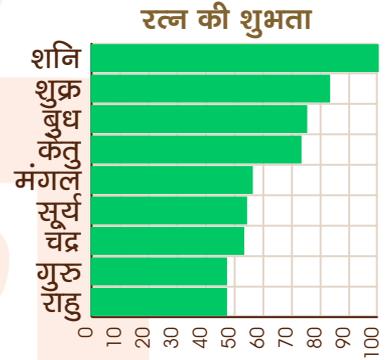
मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	सन्तति सुख, सुख
हीरा	शुक्र	83%	स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
पन्ना	बुध	75%	धनार्जन, भाग्योदय, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	73%	धन, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	56%	स्वास्थ्य, दम्पति, धन
माणिक्य	सूर्य	54%	धनार्जन
मोती	चंद्र	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	47%	नेष्ट भाग्य, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
गोमेद	राहु	47%	दुर्घटना, रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	13/12/1975	61%	31%	56%	88%	47%	89%	100%	47%	73%
केतु	12/12/1982	34%	31%	62%	75%	47%	89%	96%	22%	86%
शुक्र	12/12/2002	34%	31%	56%	81%	47%	96%	100%	55%	80%
सूर्य	12/12/2008	67%	59%	62%	75%	55%	71%	96%	22%	61%
चंद्र	12/12/2018	61%	66%	56%	81%	47%	83%	100%	22%	61%
मंगल	12/12/2025	61%	59%	69%	62%	55%	83%	100%	22%	80%
राहु	13/12/2043	34%	31%	38%	75%	47%	89%	100%	61%	61%
गुरु	13/12/2059	61%	59%	62%	62%	61%	71%	100%	47%	73%
शनि	12/12/2078	34%	31%	38%	81%	47%	89%	100%	55%	61%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/09/1965-09/04/1966 03/11/1966-20/12/1966	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	09/04/1966-03/11/1966 20/12/1966-17/06/1968 17/06/1968-07/03/1969	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/06/1968-17/06/1968 07/03/1969-28/04/1971	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/06/1973-23/07/1975	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात् आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मि, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान्, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी,

उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान्, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(12/12/2025 - 13/12/2043)

राहु की महादशा 12/12/2025 को आरम्भ और 13/12/2043 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु अष्टम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि द्वितीय भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको यश, ख्याति, शत्रुओं पर विजय तथा स्वास्थ्य की मामूली समस्या हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको विरोधियों पर विजय, उत्तम स्वास्थ्य, सेवा में लाभ, यश और ख्याति मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय तथा स्फूर्तिवान होंगे। किन्तु आपको सतर्क रहना चाहिए और किसी तरह की अति नहीं करनी चाहिए, अन्यथा आपको स्नायविक थकावट होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको चर्मरोग, पेट में अल्सर की समस्या, बुखार आदि हो सकते हैं। इनमें से अधिकांश से थोड़ी सी सतर्कता बरत कर बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको आपके जीवन साथी के साझेदारों से लाभ मिलेगा। आपको पैतृक सम्पत्ति, ग्रैच्यूइटी, सेवा-निवृत्ति से लाभ आदि की प्राप्ति भी होगी। अप्रत्याशित अचानक लाभ भी हो सकता है। आपको सट्टे में भी लाभ हो सकता है। जीविका और व्यवसाय के लिए विमान विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, कम्प्यूटर विज्ञान, विमान-चालन, वायु-सैनिक, लेखन बीमा एजेन्ट आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, कागज, टेलीफोन आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मियों, सहायकों और वरिष्ठ अधिकारियों का रुख आपके प्रति सख्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को समृद्धि तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके मित्र आपकी सहायता को तत्पर रहेंगे।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको जीवन में आराम मिलेगा। आपको अचानक धन, पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। वाहन से लाभ और आराम की संभावना है। शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शोध-परियोजना की ओर आपका झुकाव होगा। विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा-कार्य, वाणिज्य-लेखन आदि में आपकी रुचि होगी। बौद्धिक कार्यों से संबद्ध विषयों में आप अच्छा करेंगे।

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

परिवार :

परिवार में आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और उन्हें लाभ तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी को सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपको साझेदार से लाभ मिल सकता है। आपकी माता को सट्टे में लाभ तथा सुख मिलेगा और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी जबकि आपके पिता को स्वास्थ्य की मामूली समस्या, यात्रा तथा अनावश्यक व्यय होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को शत्रुओं पर विजय और नौकरी में स्थिति अनुकूल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों के जीवन में उन्नति, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा लम्बी यात्रा होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपके जीवन में परिवर्तन, अचानक लाभ तथा स्वास्थ्य की मामूली समस्या होगी। गुरु की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा सन्तान-सुख की प्राप्ति, शिशु का जन्म और शिक्षा उत्तम होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान शिक्षा से सम्बद्ध कुछ समस्या, भवन-सुख तथा छोटी यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ और विरोधियों पर विजय मिलेगी। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान विवाह, साझेदारी से लाभ तथा लम्बी यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में जीवन में प्रगति, यश, ख्याति और सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में सम्पत्ति और समृद्धि जबकि मंगल की अन्तर्दशा में सफलता, सम्पत्ति, जीवन में उन्नति, यश और ख्याति मिलेगी।

Jay maa kamakhya tantra jyotish Kendra

Shamli, Uttar Pradesh 247776, India

9653182606

chauhansushil679@gmail.com

**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(12/12/2025 - 24/08/2028)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 12/12/2025 को प्रारंभ होकर 13/12/2043 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 12/12/2025 को प्रारंभ होकर 24/08/2028 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। अष्टम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप झगड़ालू हो सकते हैं जिससे हर प्रकार से हानि हो सकती है ; अतः सावधान रहना आवश्यक है। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है; व्याधि से पीड़ित हो सकते हैं। समाज में सम्मान में कमी आ सकती है, जिससे मन दुखी रह सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(24/08/2028 - 18/01/2031)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 12/12/2025 को प्रारंभ होकर 13/12/2043 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 24/08/2028 को प्रारंभ होकर 18/01/2031 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 1, 3, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दार्शनिक, उपदेशक या अध्यापक हो सकते हैं। व्याख्यान के लिए देश-विदेश का भ्रमण कर सकते हैं। संयमित जीवन व्यतीत करेंगे; ईश्वर में ध्यान लगाएंगे। अपने से बड़ों के आज्ञाकारी होंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।